

Name of College,  
R.B.G.P. college,  
Maharajganj, Siwan

Course - T.D.C. part I. pol.sc

paper - 1st. Honours

paper - 1st subsidiary (pol.sc)

Topics Laski's views on pluralism

"सुखदा के लालन के बिना"

presented by

Dr. Md. Kalibzullah

Designation Asst. professor.

Dep't. of pol. sc.

## Introduction -

राजनीतिक दृष्टि में Harold  
Lasker एक ऐसा विचारक है, जो अपने  
प्रायोगों एवं चिंतनों में स्पष्टता नहीं  
रख पाया। 1947 तक समय के साथ अपने  
विचारधाराओं में परिवर्तन लाता रहा। दुष्-  
वाद के समक्ष वह गरीब आदमी ऐसा ही  
देखने को मिलता है। अपने राजनीतिक  
दृष्टि में अस्तिमित काल में मानव के  
विचार बहुलवादी थे। इस काल में  
रचनाओं में इससे स्पष्ट नहीं समझी  
प्रभुत्व-सम्पन्नता का विरोध किया, और  
इस विरोध के चलते वह कहता है कि  
"It would be of lasting benefit to  
political science if the whole concept  
of sovereignty is surrendered" यानी  
यदि सम्प्रभुता की अवधारणा समाप्त  
दिखा जाए तो राजनीति-विज्ञान के लिए एक



(2)

लायरी लाज की बात है। किन्तु  
जब हम उसके आधारों की विचारों का  
मध्यमन करते हैं तो देखते हैं कि उसके  
बहुलवादी विचार समाज, समुदाय तथा  
राज्य के प्रत्येक समूह को अलग देकर  
कर देते हैं। मार्क्सवाद के प्रसार में  
आने की वजह से समाज के स्वरूप  
और उसकी प्रकृति-सम्बन्धी धारणा में  
की परिवर्तन हुआ। ऐसा लगता है कि  
वह अपने मार्क्स से प्रभावित मानने में  
समाज के संप्रदायिक स्वरूप के प्रति  
कोई उल्लाह का प्रदर्शन नहीं करता।  
समाज की वैज्ञानिक अवस्था तथा  
जाते की लायरी दशा को परिवर्तित  
करने के लिए वह राज्य को समुच्च  
बनाता चाहता है। जाते के आधिकार  
को सुरक्षित रखने के लिए वह राज्य के  
हाथ में समान्यारी शक्ति की सौंपता है।

फिर भी, एक सामान्य  
प्रधान के दृष्टि 'लायरी' के बहुलवादी  
विचारों का उल्लेख किया जा सकता  
है। वह समुच्च शब्दों के अर्थ पर  
एक शब्द का प्रयोग करते हुए समाज  
के विभिन्न समुदायों के मध्य को  
प्रभावित करता है। जैसे प्रत्येक समुदाय  
के अपने-अपने कार्य हैं, और प्रत्येक राज्य  
की कुछ विशिष्ट धर्मों का आधिकार  
है और इस दृष्टि से राज्य की एक  
समुदाय' है।

समाज का एक संप्रदायिक  
(state is federal) —



③

जॉन्सो समप्रभुता के अर्थव्यापक

सिद्धान्त (Aristotelian theory of sovereignty)

जो इस बात पर बल देता है कि समप्रभुता राज्य में विचार्य जाता है, जो वह उन्मीलित आवेगारूप, अनाधीनता तथा आदेश है, पर उदाहरण देता है। वह अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "Studies in the problems of sovereignty" में समप्रभुता के अर्थव्यापक विचार्योक्त का खण्डन करता हुआ कहता है कि समाज का व्यवस्था व्यवस्था (Society is federal) है। इसके मत कहना है कि जिस प्रकार राज्य अपने आपका केंद्रीकृत मानविक (centralised entity) का रूप करता है। विभिन्न समुदाय भी अपने-अपने क्षेत्र में इसी प्रकार के मानविक रूप प्रकट हैं। यथापि समुदायों एवं संसदात्मक समूहों का निर्माण मानविक ही करता है परन्तु इनका मानविक व्यवस्था से भिन्न होता है, जो मानविक अपनी व्यवस्था उन्नीचा करता है। उदाहरण के लिए हमारे समाज में काल, यथ, देव प्रभुत्व, अपना उन्नीचा प्रचार्य यथ, यथ, यथा उन्नीचा प्रचार्य विभिन्न समुदायों का आस्तित्व है। इन समूहों का अपना जीवन है, अपनी उन्नीचा है, ये समूह एक दूसरे से भिन्न होते हैं, क्योंकि इनकी कार्य-प्रणाली जो उन्नीचा एक दूसरे से भिन्न होती है। प्रमाणिक के अनुसार जहाँ इनका अध्ययन हमारे प्रसार में विचार्य जाता है वे



④

मिलती नहीं, जहाँ से उससे कम महत्वपूर्ण नहीं लगते। जहाँ राज्य का मुख्यालय किता जा रहा तो इससे इन समुदायों एवं समूहों के बारे में जानकारी नहीं मिलती। अन्तिमप्रायः विभिन्न समुदायों का अध्ययन भी राज्य के सम्बन्ध में जानकारी नहीं देता। इससे यह स्पष्ट होता है कि राज्य को इनके ऊपर किसी प्रकार की नियंत्रणकारी क्षमता का अध्ययनकारी शक्ति नहीं है, यह विभिन्न समुदायों में एक समुदाय है।

उसके न केवल सम्बन्ध में इलाकी तथा जमीनी का उदाहरण देते हुए कहा है कि मुलात्मनी तथा हेल्डर के 'सर्वसत्तावादी लावचर राज्य' (so powerful corporate state) की स्थापना की जो उन्मादावाय का कि समस्त के सभी समुदायों तथा संगठन एवं उनके निर्माणकारी ईवाहु का रूप में लाते उनके इस स्थापित स्वरूपीवादावादी राज्य की देवी पर कानिदात करने का लिट्ट ही सादरेत्वं है, परन्तु उनके राज्य का सादरेत्वं स्थापित नहीं बालक बाह्य की गीत मात्र साकेत हुआ, क्योंकि उन लोगों ने लाते एवं समुदायों की स-वतन इच्छा एवं लाते की हला की। वस्तुतः राज्य के बारे में समुदायों के शक्ति का माफ़ी महत्वपूर्ण होती है, उनमें उल्ला या परिणाम यह होता है कि समस्त संस्था अपवा लाते की **निर्वाह** के विन देवने पड़ते हैं। **Barker** की







6) मैं सुख-समृद्धि की खोज करने की  
 हानि सुखों में लपट खाता है जो वह  
 सदा अपवर्ग की लपट में समाया। जिस  
 समुदाय के प्राणि आशावादिता अपवर्ग  
 मानने का ताकत कर देता है। जो कि  
 वे उल्लेखी सुख-समृद्धि को खोजने  
 में रुके जाते हैं। समाज के अपने उद्देश्य-  
 भाव भाव-सम्पादन में आसक्ति जाते हैं  
 तो व्यापक उल्लेख अपनी सम्पादनपूर्ण  
 आशावादिता अपवर्ग मानने को लगे  
 के लिए उतावले हो जाता है। इससे  
 अहं सिद्ध होता है। कि व्यापक के लिए  
 समुदाय की सदा सदा ही खोज  
 की लपट के व्यापक हैं।

(11) समुदायों की उत्पत्ति व्यापक  
 की मूलभूत प्रवृत्तियों की आशिया की  
 है। वे प्रवृत्तियाँ जो व्यापक में सदा सदा  
 सदा से अनन्तित हैं। मुख्यतः ये हैं,  
 एकाकी जीवन से मुँह मोड़कर साथी  
 खोजने की प्रवृत्ति, संगठित जीवन के लोचन  
 की प्रवृत्ति, सहानुभूति तथा लोहाई एवं  
 प्रेम फैलाने की प्रवृत्ति। हमारे सामाजिक  
 जीवन में चितन प्रवाद के समुदाय  
 अपवर्ग संवाले पाए जाते हैं। उनमें  
 यदि कोई हो, मूल के समुदाय  
 की उपर्युक्त प्रवृत्तियाँ ही मान  
 कर रहे हैं। चितन की लपट  
 के कारणों अपवर्ग सामाजिक  
 समा-केन्द्रों का निर्माण हुआ है। वे  
 मात्र मानव प्रवृत्तियों के ही परिणाम  
 हैं। समुदाय समुदायों का जीवन का  
 समावागम्य आकांक्षी होता है, वह



7) दूसरों से आतच्छिन्न करने की विधा के  
 साक्षर-प्रदान की सहा प्रहारी से उद्धारी  
 होता रहता है। मनुष्य इच्छाओं की  
 प्रवृत्तियों का एक पुत्र है, मनुष्य का  
 भाग्यशाली है। मनुष्य-इच्छाएं प्रहारी  
 प्रवृत्तिमूलक हैं। जो आदि प्रवृत्ति है और  
 अपनी परिपुर्त के लिए विस्तार लायक  
 प्रवृत्ति रहती है। अतः प्रत्येक क्षेत्र-  
 सफल पद। विभिन्न समुदायों एवं  
 संसाधनों की आवश्यकता होती है।

(iv) समुदायों के अन्तर्गत समुदाय  
 समूहों के अपने-अपने स्वतन्त्राचार्य  
 क्षेत्र होते हैं। राज्य के कार्य केवल  
 नहीं है। कि वह उनके आर्थिक के क्षेत्र  
 समन्वय स्थापित करे। समुदायों  
 के कार्य विभिन्न-विभिन्न दिशाओं का  
 प्राथमिकत्व प्राप्त है जो आपस में  
 विरोध की होते हैं। अतः राज्य का  
 कार्य (समन्वयकारी कार्य) अत्यन्त  
 महत्वपूर्ण है, परन्तु समुदायों के  
 कार्य की अपूर्णता अत्यन्त महत्व रखते हैं।  
 फिर, राज्य अपने समन्वयकारी कार्य  
 को विना समुदायों के सहयोग एवं  
 सहकार के सम्पादित नहीं कर  
 सकता।

(v) हमारे सामाजिक जीवन के उच्च निहित  
 उद्देश्य हैं। विभिन्न समुदायों का कार्य-संयोजन  
 समूह समाज का उच्च उद्देश्यों की प्रवृत्ति  
 सहयोग करते हैं। राज्य की यह वस्तु है,  
 अतः इसे अपनी शक्ति के प्रयोग द्वारा  
 उन्हें अपनी विपक्षीयकारी अपातन



३) न एकीकृत करने का आवेदन नहीं है,

समुदायों का सामाजिक संरचनाओं में

संयोजन करने के उद्देश्य से व्यवस्था की जा रही है।  
इससे उन्हें एक ढाँचे में व्यवस्थित कर  
दिया जाएगा।

(VI) अर्थात् विचार-विमर्श के द्वारा  
समाज में व्यवस्था की जाए ताकि पुनर्स्थापना  
की जा सके। किन्तु समुदायों के प्रति  
संयोजन की आवश्यकता नहीं माना जायेगा  
या प्रश्न पड़ेगा कि किसे राज्य के प्रति  
उत्तर देना है।

(VII) राज्य की समुदायों में से एक  
समुदाय है। एक समुदाय की कार्य-प्रणाली  
इसके समुदाय की कार्य-प्रणाली से अलग  
रहती है; अर्थात् राज्य, जो कि एक ही समुदाय  
है, अपने समुदायों का प्राथमिकत्व नहीं  
देता।

(VIII) किन्तु अर्थात् समुदायों को संयोजन  
आवश्यकता के अभाव में उन्हें उत्तर देना राज्य  
की आवश्यकताओं के अभाव में है। इसका  
उद्देश्य नहीं है - अर्थात् किन्तु मुख्य-  
धुनियाँ की व्यवस्था करना। इस प्रकार  
राज्य समुदायों से अलग नहीं है।

उपरोक्त तर्कों के आधार पर  
लोकसभा समिति ने संसदीय प्रणाली  
का विस्तार करने का निर्णय किया है। किन्तु राज्य की  
असली शक्ति केवल मातृ के पास ही  
रहती है। लोकसभा लोकसभा द्वारा  
राज्य की सर्वोपरिता को स्वीकार करने  
का कार्य नहीं करेगी। अर्थात् यह



9

100 05 24150001916 017 200405 2012

इसके अनुसार समाप्त का निर्धारण करना  
आवश्यक है। इसका तात्पर्य यह है कि इस  
को विभिन्न अनुक्रमों के अन्तर्गत व्यवस्थित  
करना आवश्यक नहीं है। यह  
उन्हें अपने आश्रित माता-पिता के अन्तर्गत  
सह-व्यवस्थापन की प्रेरणा देने का  
आवश्यक नहीं है।